भाग्यं भवति कर्मणा

आपका मासिक राशिफल

माह अप्रैल – 2014

प्रातः कालीन ग्रह स्थिति 01 अप्रैल

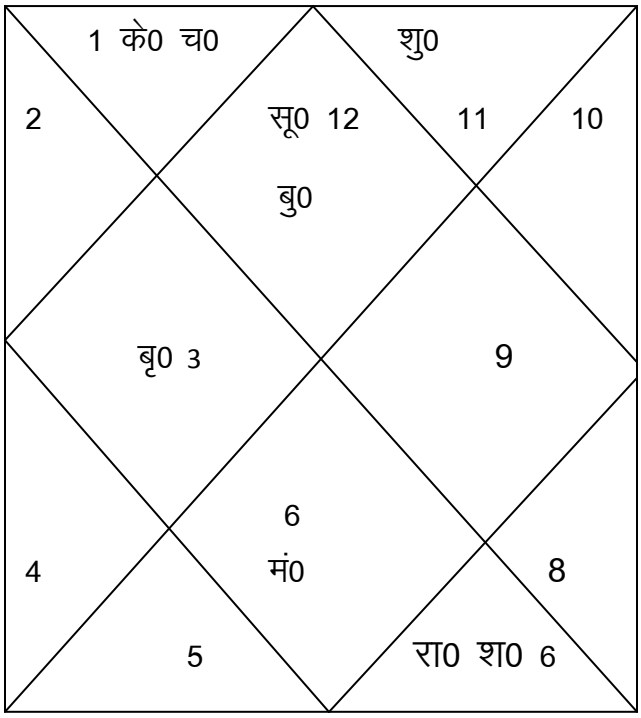

मेषः– चू, चे, चो, ला, ली, लू, लो, अ

माह के पहले सप्ताह मे शुभ सूचक क्रिया–कलाप भारी व्यय भार की ओर स्पष्ट संकेत करहे हैं। गीत–संगीत नृत्य आदि से जुड़े हुये कामकाज विस्तार रुप लेंगे। गुप्त रोग मानसिक परेशानी का वातावरण बनायेंगे। शीत और गर्म मौसम का मिजाज शारीरिक शिथिलता का वातावरण निर्मित करेगा। उच्च शिक्षा से जुड़ी हुयी गतिविधियां सरलता से अन्जाम तक पहुंचेंगी। विरोधियों के हौसले पस्त करने मे कामयाब रहेंगे। ग्रहस्थ जीवन इस सप्ताह आपको नाउम्मीद कर सकता है। माह के दूसरे सप्ताह मे यात्रा प्रकरणो की अधिकता रहेगी। अरिष्ट निवारण के लिये हनुमान जी के द्वादश नाम का जप करें। तारीख 1, 2, 5, 6, 7, 13, 14, 15 प्रगति सूचक है।

वृषः– ई, ऊ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो

अनायास अनचाहे खर्च की अधिकता के चलते ऋणग्रस्त होने की स्थिति आ सकती है। आजीविका संसाधन बड़ाने के प्रस्ताव आपके पक्ष मे आते प्रतीत होंगे। राजद्वारीय मामलो मे प्रगति पथ की ओर अग्रसर होंगे। विपक्षियों पर दबाव स्थापित करने की रणनीति कारगर कदम सिद्ध होगी। पेट सम्बन्धी रोग शारीरिक कष्ट की अनुभूति करायेंगे। प्रथम सप्ताह मे यात्रा प्रकरणों की भरमार रहेगी। तीसरा सप्ताह संतान पक्ष की ओर से चिन्तित करेगा। कुटुम्ब मे किसी मांगलिक कार्य के सम्पन्न होने का सुखद संदेश प्राप्त हो सकता है। अरिष्ट निवारण के लिये शुक्रवार को सफेद शीशा ज लमे डालकर स्नान करें लाभ रहेगा। तारीख 3, 4, 5, 8, 9, 10, 15, 16, 17 शुभकारक सिद्ध होगी।

मिथुनः– का, की, कू, के, को, हो, घ, ड़, छ

दूसरों की शिकायत करने की प्रवृत्तियों पर अनियन्त्रण आपके लिये तकलीफदेय साबित होगा। धार्मिक, अध्यात्मिक कार्यों मे आपका जुड़ाव लगातार जारी रहेगा। माह के प्रथम सप्ताह मे ही वित्तीय मामलो मे प्रगतिशील सुअवसर आयेंगे। सादगीपूर्ण भोजन की इच्छायें मन से बाहर आ सकती हैं। राज्याश्रय से जुड़े हुये समस्त काज सरलता के साथ सम्पन्न होंगे। माह का तीसरा सप्ताह अधिकाधिक यात्रा प्रकरणों का सूचक सिद्ध होगा। संतान पक्ष भी विभिन्न प्रकार के रोगों के शिकार बन सकते हैं। व्यवसायिक कार्य योजनाओं के क्रियान्वयन मे अतिरिक्त ऊर्जा खर्च होगी। अरिष्ट निवारण के लिये ऊँ वेद विदेनमः मन्त्र का प्रतिदिन 108 बार जप करें श्रेयस्कर रहेगा। तारीख 1, 2, 5, 6, 7, 10, 11, 12 उत्तम सूचक प्रतीत होगी।

कर्कः– ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

निर्णय क्षमता मे आपके शौर्य, पराक्रम, दृढ़ता आदि का प्रतिबिम्ब झलकता प्रतीत होगा। किसी धार्मिक, रमणीक यात्रा के अवसर मनः स्थिति को प्रभावित करेंगे। उत्तमता से जुड़े हुये क्रिया–कलाप अतिरिक्त खर्च का वातावरण बनायेंगे। रोजी–रोटी की दिशा मे किये गये प्रयास सार्थक परिणाम की ओर अग्रसर होंगे। किसी न किसी रुप मे स्त्रीपक्ष का सहयोग आपके कार्यों मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। कष्टकारक यात्रा प्रसंगो की अधिकता रहेगी। माह का प्रथम सप्ताह राजकीय कार्यों तथा आर्थिक मामलो मे लाभदायक है। अरिष्ट निवारण के लिये सोमवार का व्रत करें। तारीख 1, 2, 3, 4, 5, 7, 8, 9 शुभफलदायक प्रतीत होंगी।

सिंहः– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

जीवन संगिनी का सहयोग और सानिध्य इस माह मे सुखद अहसास करायेगा। कठोर भाषा–शैली का प्रयोग कुटुम्ब के सदस्यों से वैचारिक मतभेद का कारण बन सकता है। अनायास किसी धार्मिक यात्रा के अवसरों मे व्यवधान आयेंगे। प्रथम सप्ताह मे राजकीय क्रिया–कलाप उत्थान पथ की ओर अग्रसर रहेंगे। अरिष्ट निवारण के लिये ऊँ शान्ताय नमः मन्त्र का प्रतिदिन 108 बार जप करें। निश्चित लाभ प्राप्त होगा। तारीख 3, 4, 5, 6, 7, 10, 11, 12, 13, 14 सुखदपूर्ण अहसास कराने मे सफल सिद्ध होगी।

कन्याः– टो, पा, पी, पू, पे, पो,ष, ण, ठ

सरदर्द, ज्वर आदि से जुड़ी हुयी सतस्यायें आपकी मनः स्थिति को प्रभावित करेगी। विवादित कामकाजों से अपने आपको दूर रखना हितकर होगा। शत्रु संख्या मे लगातार वृद्धि मानसिक असंतोष की सूचक सिद्ध होगी। व्यस्तता के पलों मे ईश्वर अराधना परम आवश्यक है। माह का प्रथम सप्ताह भाग्य वृद्धि सूचक सिद्ध होगा। द्वितीय सप्ताह मे लाभदायक स्थितियां एकत्रित होंगी। बिगड़ते स्वास्थ्य मे अति आवश्यक सुधार भी संभावित है। भोजन व्यवस्था का विस्तार करने मे सफल सिद्ध होंगे। प्राविधिक शिक्षा सम्बन्धी मामलो मे प्रगति सूत्र स्थापित होंगे। अरिष्ट निवारण के लिये ऊँ विदुशे नमः मन्त्र का 108 बार जप करना हितकर रहेगा। तारीख 5, 6, 7, 8, 9, 10, 13, 14, 15 बेहतरी का अहसास कराने मे सफल हांगी।

तुलाः– रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते

अनायास पेय पदार्थों का आश्चयजनक रुप से सेवन बड़ सकता है। माह की शुरुवात मे जीवनसाथी के साथ बेहतर सामन्जस्य स्थापित रहेगा। व्यवसाय मे त्वरित कार्ययोजनायें लाभदायक प्रतीत होंगी। सामाजिक जीवन मे संयमित वाणी का प्रयोग बेहद लाभकारक सिद्ध होगा। संतान पक्ष के उत्तरदायित्वों के प्रति मनः स्थिति प्रभावित होगी। हास–परिहास मनोरंजन आदि के क्षेत्र मे विशेष उपलब्धियां प्राप्त हो सकती हैं। माह के प्रथम सप्ताह मे ही यात्रा प्रकरणों की अधिकता का वातावरण बनेगा। द्वितीय सप्ताह राजकाज की दिशा निर्धारित करने वाला होगा। अरिष्ट निवारण के लिये ऊँ श्वेतांबराय नमः मन्त्र का 108 बार जप करें लाभ रहेगा। तारीख 7, 8, 9, 10, 11, 12, 15, 16, 17 उत्तम सूचक प्रतीत होंगी।

वृशिचकः– तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

निर्णय क्षमता निश्चय और अनिश्चय के मध्य फिसलती प्रतीत होगी। संतान पक्ष की ओर से सुखद समाचार प्राप्त हो सकता है लिखने पढ़ने की जिज्ञासा अन्तःकरण से बाहर आयेगी। सामाजिक संरचना निर्माण कार्यों मे आपकी संलग्नता सामाजिक सुख्याति के अवसर उपलब्ध करायेगी। माह का प्रथम सप्ताह विरोधियों से सामन्जस्य स्थापित करने के लिये बेहतर सिद्ध होगा। अनैतिक कार्य और अनैतिक सोच वाले तत्वों से विशेष सावधानी आपेक्षित है। कठिनाइयों के साथ आय और व्यय मे सन्तुलन स्थापित करने मे कामयाब होंगे। अरिष्ट निवारण के लिये प्रतिदिन बजरंग बाण का पाठ करें। तारीख 1, 2, 3, 4, 5, 10, 11, 12, 13, 14 शुभ परिणामदायक सिद्ध होगी।

धनुः– ये, यो, भा, भी, भू, भे, ध, फ, ढ़

स्त्री पक्ष के सहयोग के कारण उच्च शिक्षा की दिशा मे प्रगतिशील स्थितियों की ओर अग्रसर होंगे। लेन देन से जुड़े हुये मामलो मे लाभान्वित रहेंगे। गृहिणी के सहयोग से ग्रहस्थ जीवन सामान्य प्रक्रिया के साथ चलता–फिरता प्रतीत होगा। अनायास धनागम सम्बन्धी कार्य योजनायें विस्तार रुप लेने मे सफल होंगी। शासन, प्रशासन से जुड़ी हुयी समस्त गतिविधियां सरलता के साथ अंजाम तक पहुंच सकती हैं। संतान पक्ष से जुड़े हुये मामले आपकी मानसिक परेशानी का सबब बनेंगे। प्रथम सप्ताह मे लिखने–पड़ने मे विध्न बाधायें आयेंगी। द्वितीय सप्ताह व्यवसाय के लिये उत्तम है। अरिष्ट निवारण के लिये पीले वस्त्र तथा पीला रुमाल धारण करें। तारीख 3, 4, 5, 6, 7, 12, 13, 14, 15, 16 हितकर प्रतीत होंगी।

मकरः– भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी

बातचीत मे झलकती शिष्टाचार की अनुभूति परिजनो को बेहद प्रभावित करेगी। अनचाहे एकत्रित यात्रा प्रकरण मानसिक संताप का वातावरण निर्मित करेंगे। धनामग की सूचना आपके मन को प्रसन्न कर सकती है। विरोधियों की चुगुलखोरी करने की प्रवृत्तियां आपकी मानसिक परेशानी का वातावरण बनायेंगी। माह का दूसरा सप्ताह ग्रहस्थ जीवन मे सुखदपूर्ण अहसास करायेगा। भोजन व्यवस्था का विस्तार भी संभावित है। त्वरित व्यापारिक प्रकरण भी लाभदायक प्रतीत होंगे। आप की प्रशासनिक क्षमता भी बेहतर सिद्ध होगी। धार्मिक मामलो मे अवरोध आयेंगे। अरिष्ट निवारण के लिये घर मे शमी का वृक्ष लगायें लाभ रहेगा। तारीख 5, 6, 7, 8, 9, 10, 15, 16, 17 उत्तम परिणामदायक सिद्ध होगी।

कुम्भः– गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, द

भोग, विलास, ऐश्वर्य के संसाधन जुटाने के प्रयासों को बल मिलेगा। इस माह मे सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री की खरीद–फरोख्त भी बड़ सकती है। खान–पान और तरल पदार्थों से जुड़े कारोबार मे सकारात्मक दिशा की ओर अग्रसर होंगे। बातचीत के दौरान सतर्कता बरतना भी आपके लिये अति आवश्यक है। यातायात के साधनो के प्रयोग मे विशेष सावधानी आपेक्षित होगी। माह के तीसरे सप्ताह मे राजधर्म से जुड़े मामलो मे उन्नति होगी। अनायास किसी चिर परिचित मित्र से मुलाकात का हर्ष रहेगा। मानसिक रुप से नास्तिकता पथ की ओर अग्रसर रहेंगे। अरिष्ट निवारण के लिये ऊँ नील वर्णय नमः मन्त्र का प्रतिदिन 108 बार जपर करें। तारीख 1, 2, 7, 8, 9, 10, 11, 12 शुभसूचक है।

मीनः– दी, दू, दे, दो, थ, झ, अ, चा, ची

शौकीन मिजाज होने के कारण शौक से जुड़ी हुयी सामग्री की खरीद–फरोख्त पर व्यय भार बड़ेगा। वाणी मे चिड़चिड़ेपन की समाविष्टि परिजनो के लिये तमलीफदेय साबित होगी। माह का प्रथम सप्ताह शारीरिक कष्ट की ओर संकेत करता है। ग्रहस्थ जीवन से जुड़ी हुयी समस्यायें कम होने वाली नही प्रतीत होंगी। माह के दूसरे सप्ताह मे अतिमहत्वपूर्ण कार्यों मे राहत मिलती दिखाई देगी। स्वास्थ्य के प्रति पूरे माह भर सजग रहें। अनियन्त्रित सोच और अनियन्त्रित यात्राओं का सिलसिला लगातार आगे बड़ेगा। माह का तीसरा सप्ताह कामकाज की दिशा मे उत्तम है। अरिष्ट निवारण के लिये 09 गुरुवार को 09 पीले कनेर और 09 चमेली के पुष्प जल मे प्रवाहित करें। तारीख 3, 4, 5, 10, 11, 12, 13, 14, 15 उत्तम परिणामदायक है।

माह के प्रमुख व्रत और त्यौहारः–

1- चन्द्रदर्शन मु0 30 समताकारक, झूलेलाल जयन्ती, 01 अप्रैल, मंगलवार।

2- मत्स्यावतार तृतीया, सौभाग्य सुन्दरी तृतीया व्रतम, गणगौरी तृतीया (राजस्थान), सरहुल (बिहार) 02 अप्रैल, बुधवार।

3- श्री वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रतम्, 03 अप्रैल बृहस्पतिवार।

4- पुष्पान्जली व्रत प्रारम्भ (जैन), दसलक्षण व्रत प्रारम्भ (जैन) कल्यादि पंचमी, श्री पंचमी, 04 अप्रैल, शुक्रवार।

5- सूर्य षष्ठी व्रतम् (बिहार), श्री स्कन्द षष्ठी व्रतम, 05 अप्रैल, शानिवार।

6- ओली प्रारम्भ (जैन) भानु सप्तमी, श्री भास्करस्य पूजा सप्तमी, 06 अप्रैल, रविवार।

7- महाष्टमी, अष्टमी व्रतम्, तारा अष्टमी, 07 अप्रैल, सोमवार।

8- श्री रामनवमी, महानवमी व्रतम्, 08 अप्रैल, मंगलवार।

9- नवरात्र व्रतपारण, ओली समापन (जैन), 09 अप्रैल, बुधवार।

10- कामदा एकादशी व्रतम् सर्वेषाम्, 11 अप्रैल, शुक्रवार।

11- शानि प्रदोष द्वादशी व्रतम्, श्री अनंग त्रयोदशी व्रतम्, मदन द्वादशी, वामन द्वादशी, 12 अप्रैल, शानिवार।

12- श्री महाबीर जयन्ती, दमनक चतुर्दशी, 13 अप्रैल, रविवार।

13- पूर्णिमा, हनुमत जयन्ती (दक्षिण भारत) 15 अप्रैल, मंगलवार।

14- श्री संकष्ठी गणेश चतुर्थी व्रतम्, चन्द्रोदय रात्रि मे 09 बजकर 26 मिनट पर, 18 अप्रैल, शुक्रवार।

15- ईस्ट संडे (क्रिश्चियन) 20 अप्रैल, रविवार।

16- श्री शीतला अष्टमी व्रतम्, दृश्य अगस्त्यस्त प्रातः 05 बजकर 55 मिनट पर, 22 अप्रैल मंगलवार।

17- वरुथिनी एकादशी व्रतम् सर्वेषाम्, श्री वल्लभाचार्य जयन्ती, मृत्युबाण दिन मे 03 बजकर 47 मिनट तक, 25 अप्रैल, शुक्रवार।

18- मास शिवरात्रि त्रयोदशी व्रतम्, 27 अप्रैल, रविवार।

19- श्रद्धादौ अमावस्या, णमोकार व्रत (जैन) 28 अप्रैल, सोमवार।

20- भौमवती अमावस्या, 29 अप्रैल, मंगलवार।

पंडित आनंद अवस्थी

पं0 आनन्द अवस्थी : पटेल नगर कालोनी बछरावां
रायबरेली
डी–79, साउथ सिटी, लखनऊ एम0बी0 नं0– 9450460208
----E-mail : pt.anand.awasthi@gmail.com